नन्हा टिन का सैनिक

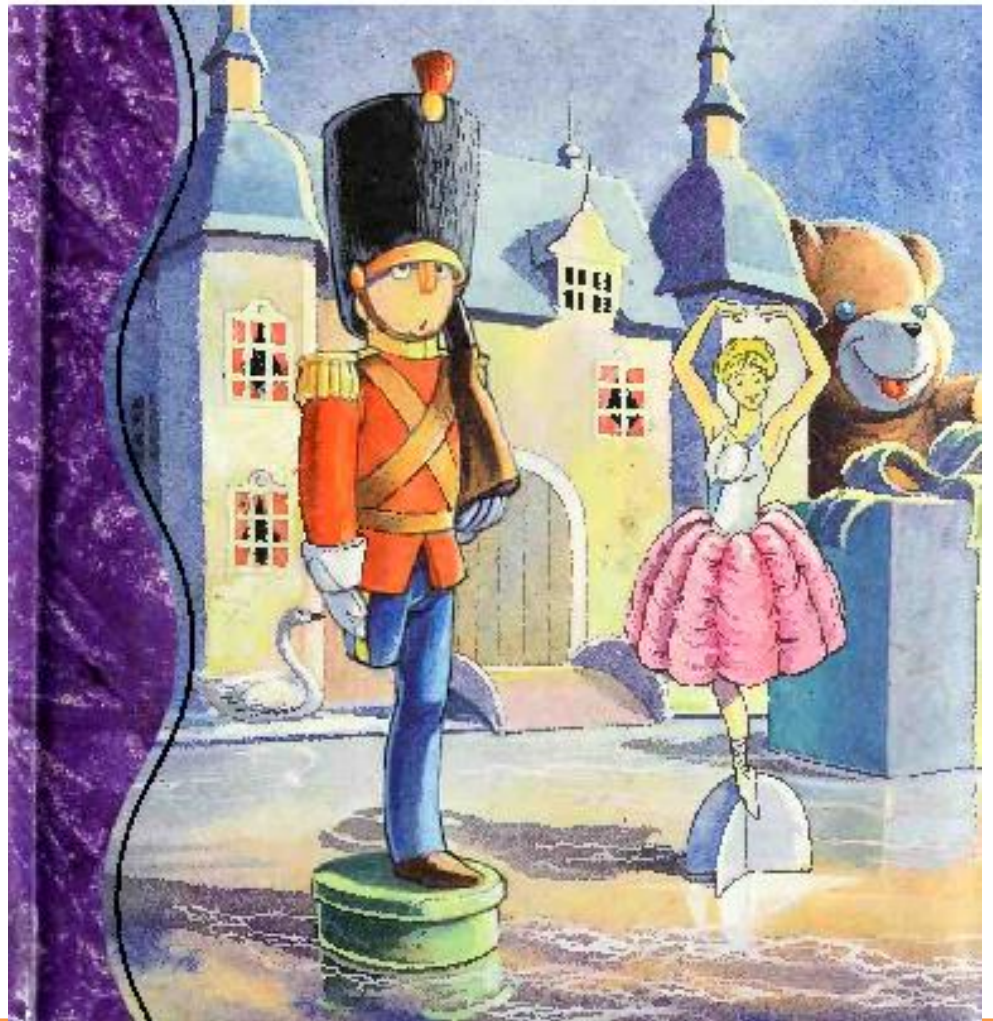

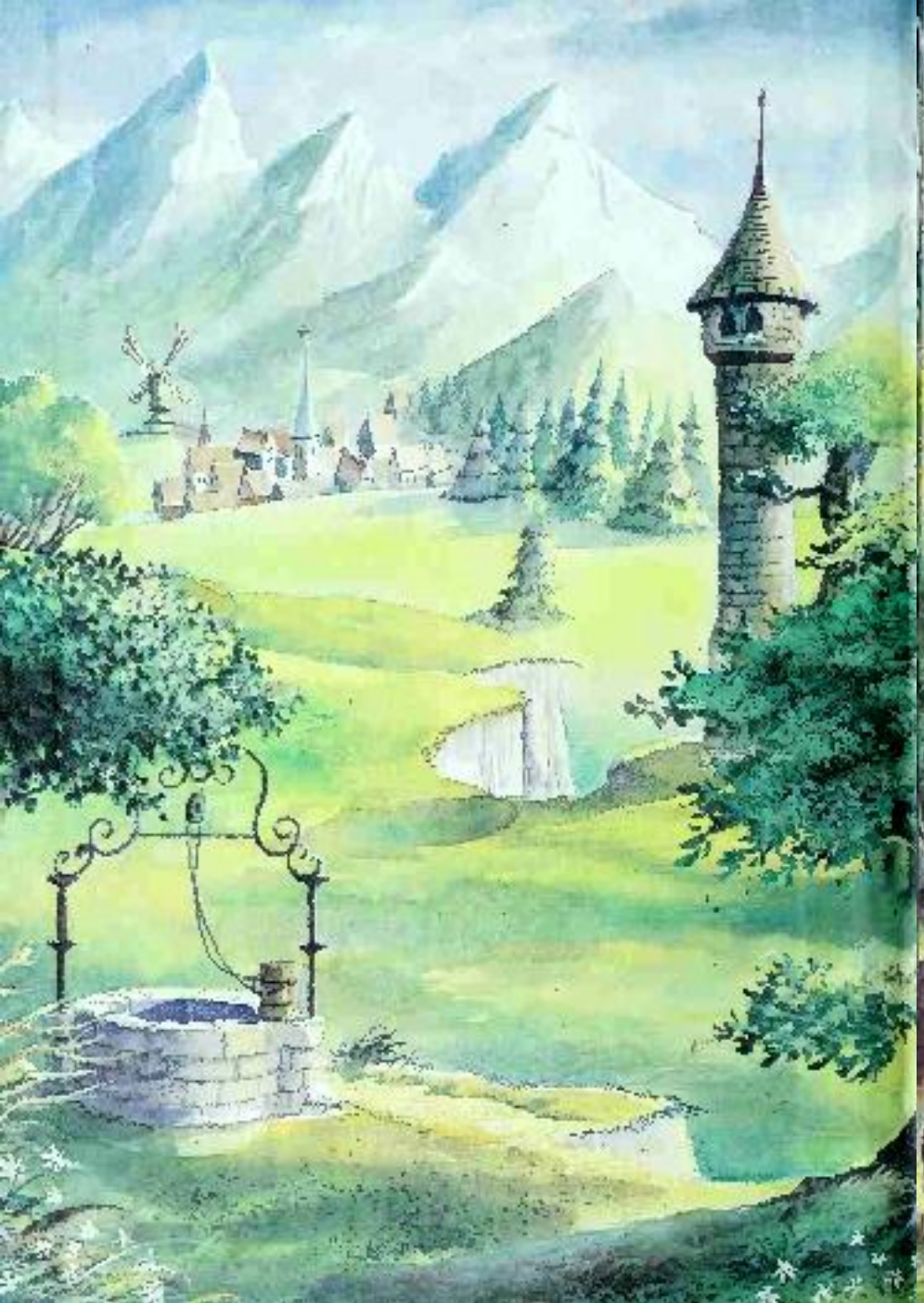

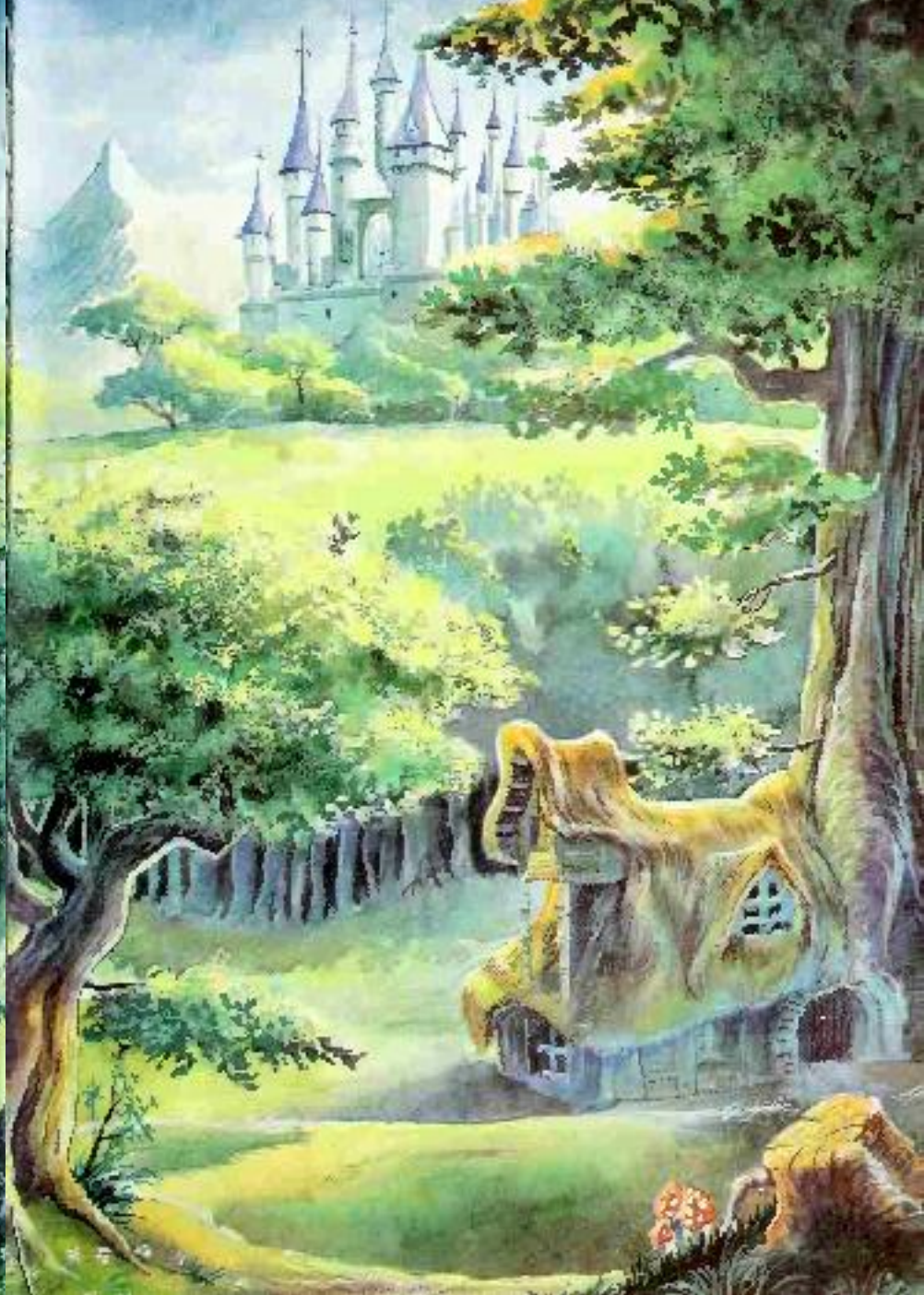

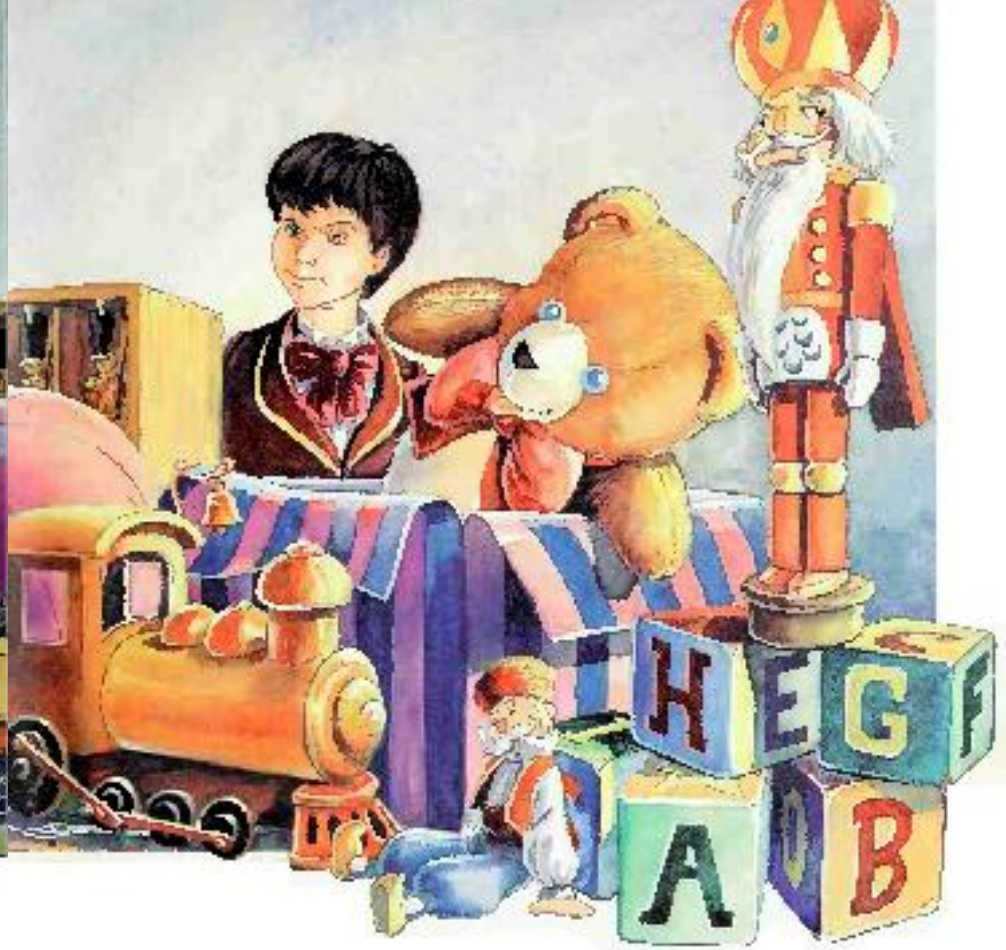

एक समय की बात है कि एक टिन-स्मिथ ने पुराने टिन से नन्हे-नन्हे सैनिक बनाये. सब सैनिक सीधे खड़े थे. हर एक ने कंधे पर बंदूक पकड़ रखी थी और लाल, सुंदर जैकेट, नीली पतलून और काले रंग की ऊँची, सोने के बिल्ले लगी, हैट पहन रखी थी. अंतिम सैनिक बनाने के लिए उसके पास पर्याप्त टिन नहीं बचा था, इसलिए उस सैनिक की एक ही टाँग थी.

फिर टिन-स्मिथ अपने टिन के सैनिकों को खिलौनों की एक दूकान में ले गया. शीघ्र ही उसके खिलौने एक छोटे बच्चे के लिए जन्मदिन के उपहार स्वरूप खरीद लिए गए. जब अपने भाई और बहन के सामने छोटे लड़के ने डिब्बा खोला तो जो खिलौना सबसे पहले बाहर निकाला वह था एक टाँग वाला सैनिक.

टिन के सैनिक के सामने कागज़ का एक महल रखा था. महल के चारों तरफ शीशे की झील थी, जिसमें शीशे के हँस तैर रहे थे. लेकिन सबसे सुंदर खिलौना था, किले के द्वार पर खड़ी, गुलाबी घाघरा पहने, कागज़ की नन्ही नर्तकी. उसके नीले कमरबंद पर एक बड़ा सितारा झिलमिला रहा था. नन्ही नर्तकी ने अपने बाँहें उठा रखी थीं और एक पाँव अपने पीछे इस तरह उठा रखा था कि वह दिखाई न दे रहा था.

"यह लड़की मेरे योग्य है," यह समझ कर कि, उसकी भाँति, नर्तकी की भी एक टाँग थी, सैनिक ने सोचा.

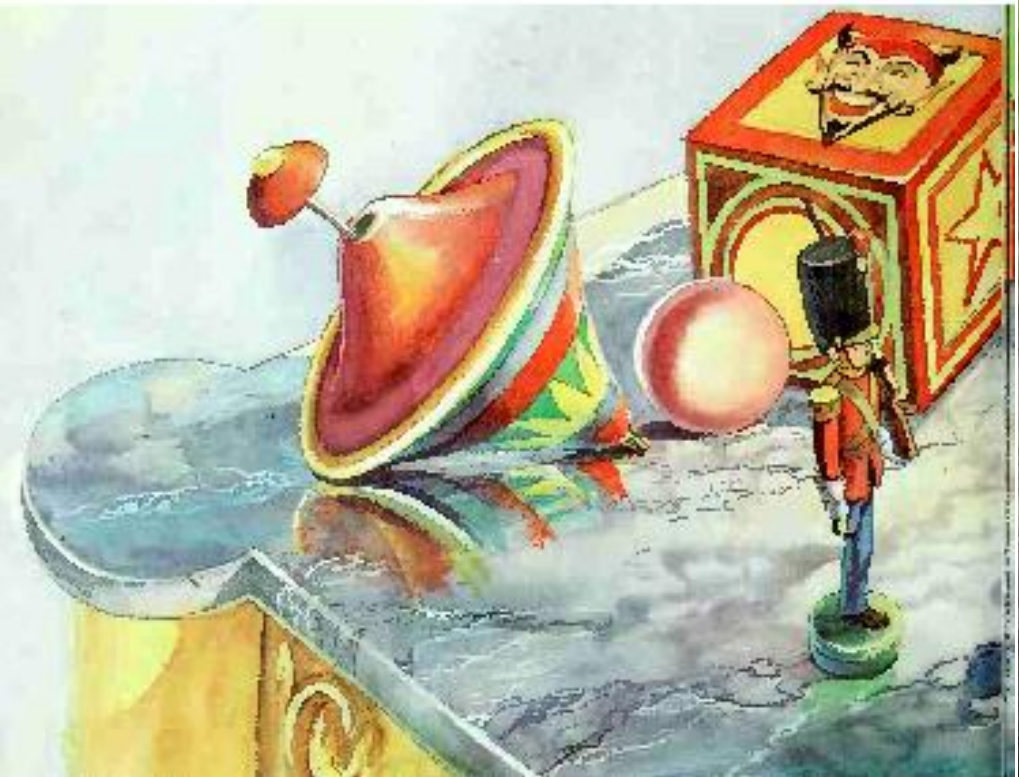

उस रात, जब घर के सब लोग सो गए, सब खिलौने खेलने लगे. नट-क्रैकर गुड़िया कलाबाज़ियाँ करने लगी जबकि अन्य खिलौने नाचने और इधर-उधर दौड़ने लगे. सिर्फ टिन का सैनिक और कागज़ की नर्तकी अपनी जगह से नहीं हिले. वह स्थिर खड़े रहे और एकटक एक दूसरे को देखते रहे.

अचानक घड़ी ने आधी रात की घंटी बजाई और खटाक! जैक-इन-द-बॉक्स का ढक्कन खुल गया और एक शैतान जैसा दिखने वाला बौना उछल कर बाहर आ गया.

“अपनी आँखें अपने पर गड़ाये रखो, सैनिक!” बौना चिल्लाया. लेकिन सैनिक सीधा देखता रहा.

“तो ठीक है, देखना कल मैं क्या करता हूँ!” बौना गुर्राया.

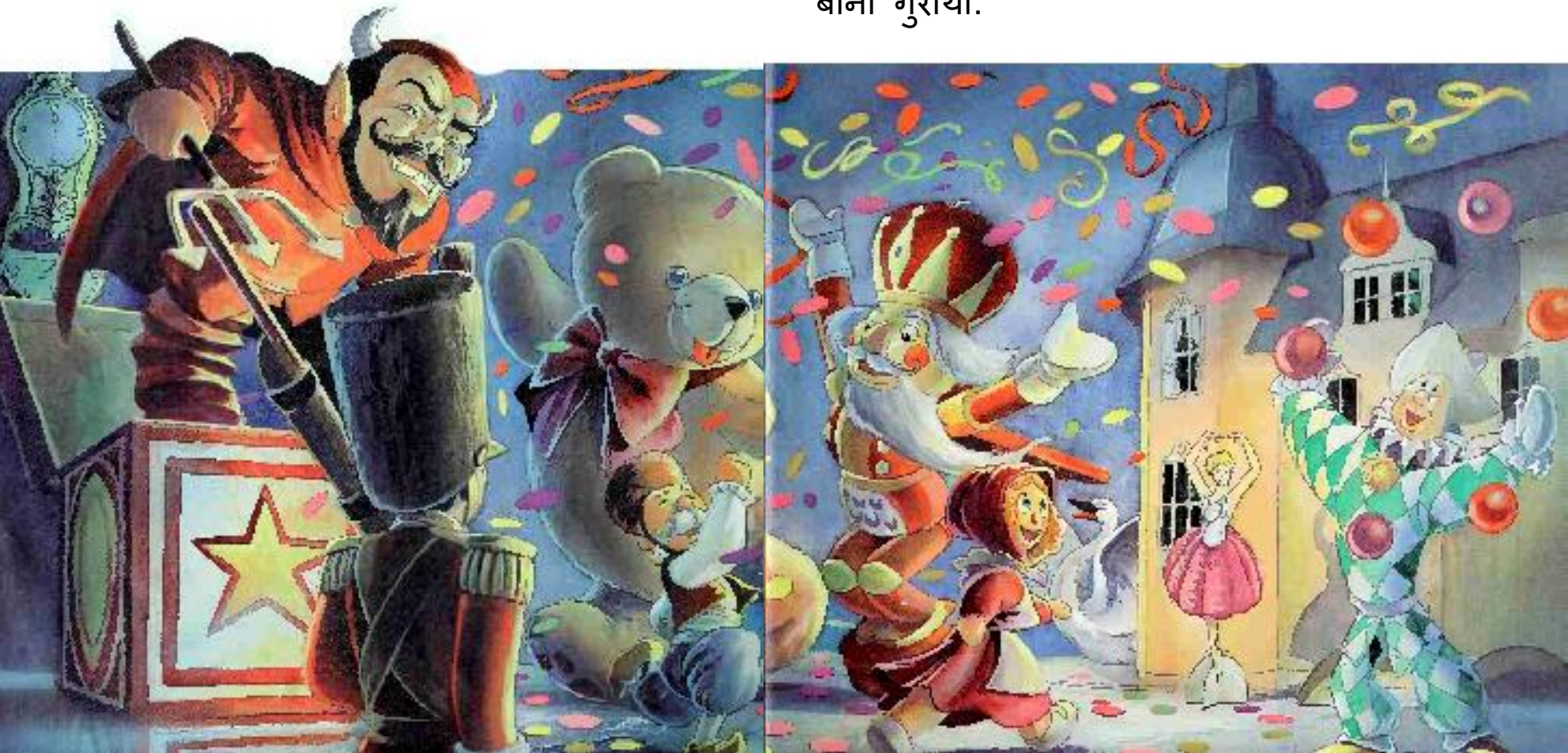

अगली सुबह छोटा लड़का कुछ देर तक टिन के सैनिक के साथ खेलता रहा. फिर खुली हुई खिड़की की चौखट पर उसे रख दिया. इसके पहले कि वह समझ पाता, शायद हवा के कारण या फिर शैतान बौने के कारण, सैनिक उड़ कर खिड़की के बाहर जा गिरा. छोटा लड़का भाग कर खिड़की के पास आया और बाहर देखने लगा. उसने, तीन मंज़िल नीचे, गली में देखा. लेकिन उसे कुछ दिखाई न दिया.

“प्लीज़, क्या मैं नीचे जाकर अपने सैनिक को ढूँढ़ नहीं सकता?” उसने अपनी आया से पूछा. लेकिन आया ने सिर हिला कर मना कर दिया. बाहर इतनी तेज़ वर्षा हो रही थी कि छोटे लड़के के लिए बाहर जाना ठीक न था.

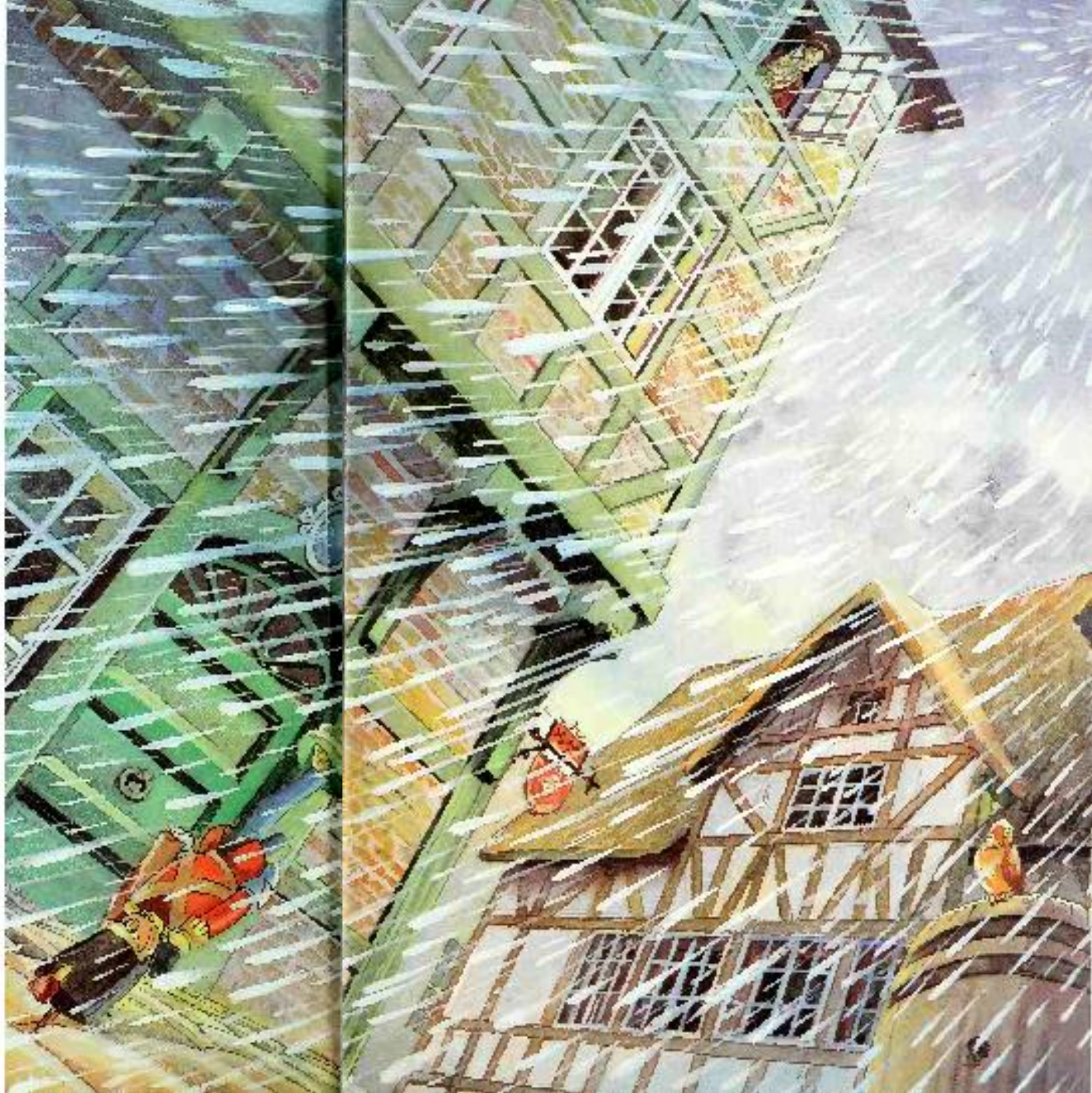

आया ने खिड़की को ज़ोर से बंद कर दिया. छोटा लड़का बस दुःखी मन से खिड़की के शीशे से बाहर देख सकता था.

नीचे गली में दो नटखट लड़के बारिश में खेल रहे थे. उन्हें टिन का सैनिक मिला गया. रास्ते के दो पत्थरों के बीच सैनिक उलटा फंसा हुआ था.

“चलो, इसके लिए एक नाव बनाते हैं!” दोनों लड़के चिल्लाए. उस रास्ते की नाली में इतना पानी बह रहा था कि एक छोटी नदी सी बन गई थी. एक पुरानी अख़बार लेकर उन्होंने एक नाव बना ली और उसमें नन्हे सैनिक को रख दिया और उसे नाली के पानी में बहा दिया.

जब नाव पानी में तेज़ी से बह रही थी, नन्हा सैनिक उस में सीधा खड़ा था और सामने देख रहा था.

“अब मैं कहाँ जा रहा हूँ?” उसने सोचा. “यह उस बौने की गलती होगी. अगर वह सुंदर नर्तकी मेरे साथ होती तो मैं परवाह न करता.”

तभी एक बड़ा चूहा नाव के पास पानी से बाहर आया. “रुको! तुम्हारा पासपोर्ट कहाँ है?” वह चिल्लाया. लेकिन नाव आगे चलती गई, तेज़, और तेज़.

कागज़ की नाव बहती हुई नाली से निकल कर नहर में जा गिरी. अब तक वह इतनी गीली हो गई थी कि अधिक समय तक तैर न सकती थी. आखिरकार, नाव के टुकड़े-टुकड़े हो गए और टिन का सैनिक खड़े-खड़े ही सीधा पानी में डूब गया, नीचे, और नीचे.....लेकिन तभी एक बड़ी मछली उसे निगल गई.

“यहाँ अंदर कितना अँधेरा है!” उसने सोचा. “मेरे डिब्बे से भी अधिक अँधेरा!”

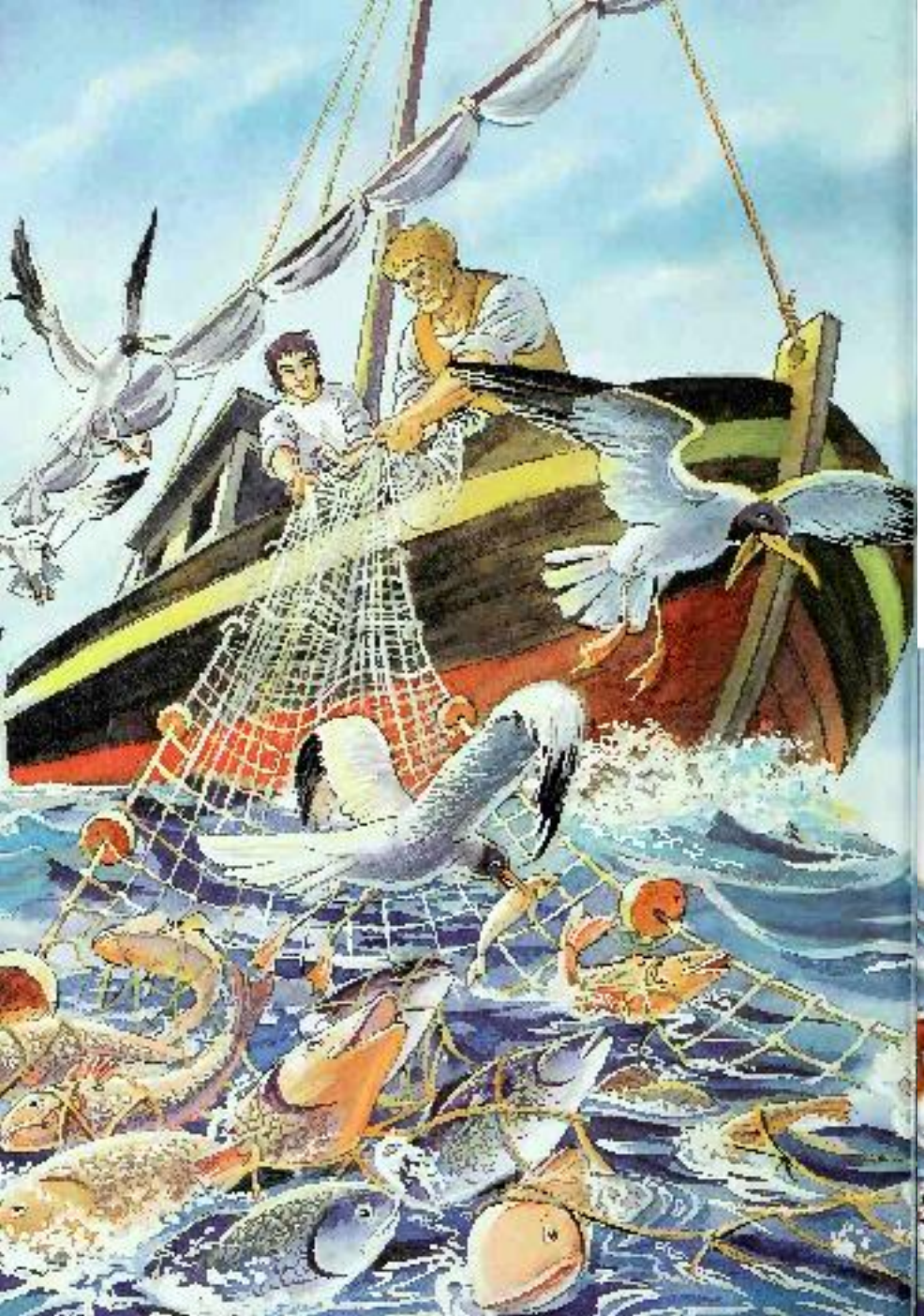

मछली नहर में तैरती रही और सागर में पहुँच गई. वह अपने पेट में टिन के सैनिक को अपने साथ ले गई. नन्हा सैनिक उस बड़े कमरे के विषय में सोच रहा था जहाँ बच्चे थे, खिलौने थे, कागज़ का महल था और सुंदर नर्तकी थी.

“मुझे लगता है कि उनसे मेरी भेंट अब कभी न होगी- उसे दुबारा न देख पाऊँगा,” उसने आह भरी. उसे इस बात का अनुमान ही न था कि वह कहाँ था या उसके साथ क्या हो रहा था. लेकिन संयोग से बड़ी मछली एक मछुआरे के जाल में फंस गई. मछुआरे ने जाल को खींच कर नाव पर चढ़ा लिया.

मछुआरा पकड़ी हुई सारी मछलियाँ नगर में ले आया और एक मछली बेचने वाले ने बड़ी मछली अपनी दुकान में सज़ा कर रख दी. थोड़े समय बाद ही मछली खरीदने कौन आया-छोटे लड़के की आया और उसने वही बड़ी मछली चुन कर खरीद ली जिस के अंदर टिन का सैनिक था.

आया ने मछली लाकर बावर्ची को दी. “कितनी बढ़िया मछली है!” बावर्ची ने प्रसन्नता से कहा और पकाने के लिए उसने मछली का पेट काटा. “लेकिन इसके भीतर कोई सख्त चीज़ है,” वह बुदबुदाई.

वह आश्चर्यचकित हो गई, जब उसने मछली के पेट से टिन का सैनिक बाहर निकाला. आया उस खिलौने को तुरंत पहचान गई. “यह तो छोटे स्वामी का खोया हुआ टिन का सैनिक है!” उस ने चिल्लाकर कहा.

जब छोटे लड़के को पता चला कि उसका खोया हुआ सैनिक मिल गया था तो वह बहुत प्रसन्न हुआ. जहाँ तक टिन के सैनिक की बात थी तो लंबे समय तक अंधेरे में रहने के कारण, मछली के बाहर, तेज़ प्रकाश देखते ही वह थोड़ा घबरा गया. अंतत: उसे समझ आया कि वह कहाँ था.

सैनिक को मेज़ पर वही खिलौने दिखाई दिये, कागज़ का सुंदर महल और शीशे की झील. उसके सामने वही प्यारी नर्तकी थी जो अभी भी एक टाँग पर खड़ी थी. अगर आँसू बहाने के लिए उसके पास थोड़ा टिन होता तो वह अवश्य रो पड़ता. इसके बजाय वह नर्तकी को एकटक देखता रहा और वह भी उसे एकटक देखती रही.

समाप्त